संवाद दर्शन

सहयोग राशि-5/-

विक्रम संवत : 2081 | वर्ष : 2025

हिन्दी मासिक

अंक : फरवरी (द्वितीय)

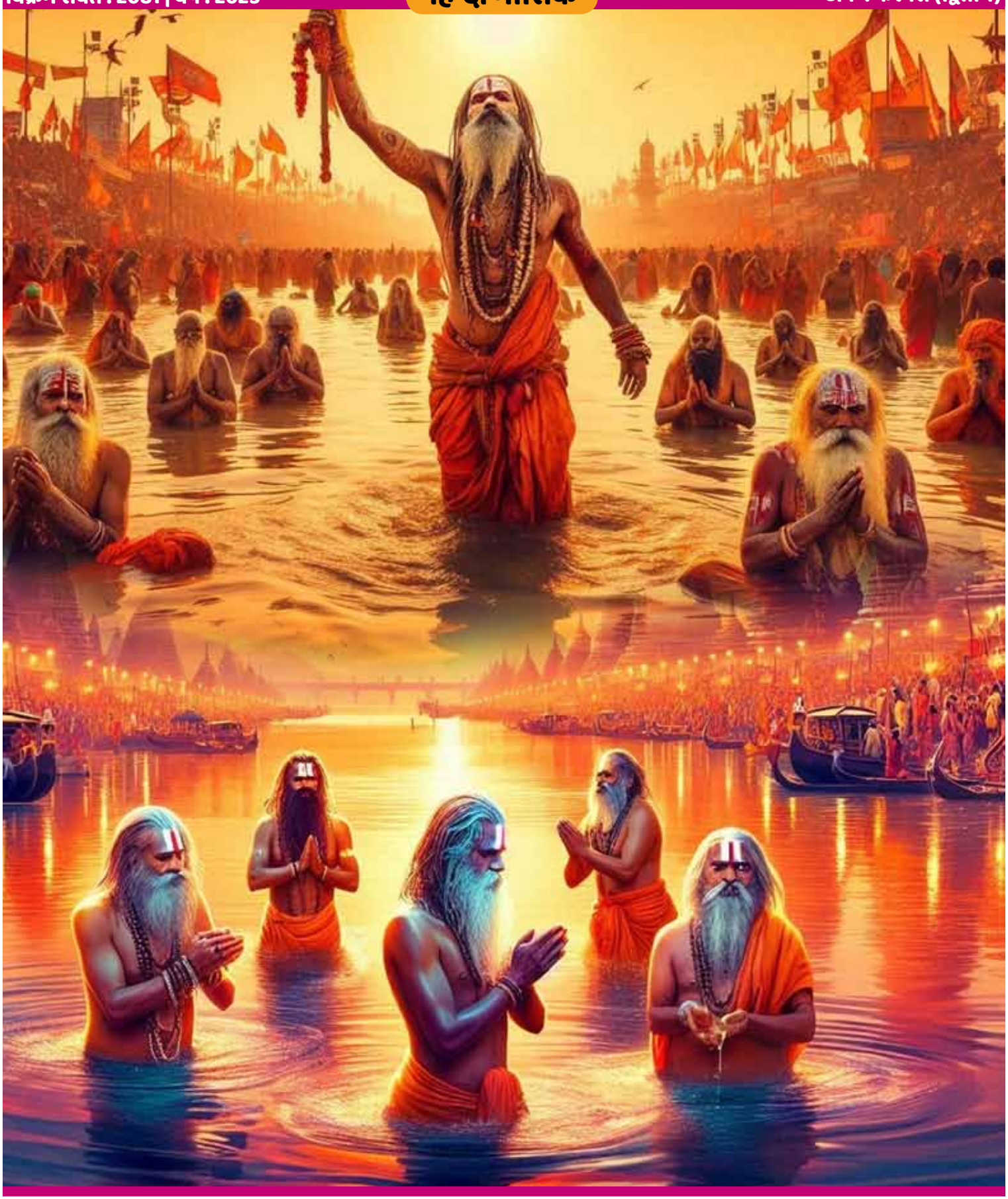

भक्तमाल-श्री पृथ्वीराज जी

आमेरनरेश श्री पृथ्वीराज जी स्वामी श्रीकृष्णदास पयोहारी जी के शिष्य थे। एक बार श्री स्वामी जी की आज्ञासे राजाजी उनके साथ द्वारका जी की यात्रा के लिये तैयार हुए। राजाके दीवान ने जब यह बात सुनी तो उसे दुख हुआ। वह रातको एकान्तमें श्रीपयोहारीजी महाराज़के पास गया और महाराजसे चुपकेसे कानमें कहा- महाराज जी! इस समय राजा तन-मन और धनसे साधुओं की सेवामें लगे हुए हैं, आमेर नगरकी जनतामें भक्तिकी सुंदर भावना व्याप्त है। राजाके चले जानेसे साधुसेवामें तथा भक्तिप्रचार में बाधा होगी। अत: मेरे विचारसे तो आप राजाको साथ न ले जायें, सो ही ठीक है। श्रीपयोहारी जी ने कहाँ- तुम जाओ, मैं राजाको साथ नहीं ले जाऊँगा।

मंत्रीकी बातको स्वामीजीने राजासे नहीं बताया। प्रातःकाल राजा पृथ्वीराज हाथ जोडकर श्रीस्वामीजीके सामने खड़े हो गये। तब श्रीस्वामीजी ने आज्ञा दी कि -तुम मेरे साथ न चलकर यहीं आमेरमें ही रहो और साधु सेवा करो। राजाने श्रीपयोहारीजी से प्रार्थना की – प्रभो! मैं श्रीद्वारकानाथ जी के दर्शन, श्रीगोमती-संगममें स्नान एवं भुजाओं-में शंख-चक्रकी छाप धारण करूँ, इसीलिये आप अपने मनमें मुझे भी साथ ले चलनेकी इच्छा कीजिये। श्री स्वामीजी ने कहा -राजन्! तुम अपने मनमें तनिक भी चिंता न करों। दर्शन, स्नान और छाप ये तीनों लाभ तुम्हें घर बैठे ही मिलेंगे। राजाने कहा- आपने जो आज्ञा दी, उसे मैंने सिरपर धारण कर लिया। इसके बाद श्रीपयोहारीजीने प्रस्थान किया। कहते हैं कि राजाकी भक्तिको देखकर श्रीपयोहारी जी ने अपनी योगसिद्धिसे आधी रात के समय राजमहल-में प्रकट होकर राजाको वहीं श्रीद्वारकाधीशजीके दर्शन करा दिये। राजाने प्रदक्षिणा करके साष्टांग दण्डवत की। भगवान ने कहा- मेरी बात ध्यानपूर्वक सुनो "यह गोमती संगम है, तुम इसमें स्नान कर लो। प्रभुकी बात सुनकर राजाने बड़े प्रेमसे स्नान किया, परंतु गोता लगाकर जब बाहर आये तो वहाँ भगवान् नहीं दिखलायी पड़े।

शंख-चक्र-की छाप राजाके शरीरमें लगी थी। इधर सोकर उठनेमें राजाको विलम्ब हुआ जानकर रानी उन्हें जगाने आयी। उन्होंने देखा कि राजाका शरीर भीगा हुआ है। केसे भीगा है, पूछनेपर राजाने कहा – अभी मैंने श्रीगोमती जी में स्नान किया है, तुम भी मेरे शरीर एवं वस्त्रो में लगे जलका स्पर्श कर लो और श्रीद्वारकानाथजीको हृदय में धारण कर लो। रानीने ऐसा ही करके अपनेको बड़भागिनी माना।

सवेरा होते ही आमेर नगरमे उसके बाद सम्पूर्ण राज्यमें भक्तिके चमत्कार का शोर मच गया। बहुत-से लोगोने आकर राजाका दर्शन किया, समाचार पाकर दूर दूरतक के अनेक बड़े बड़े सन्त और महन्त दौड-दौड़कर आये और उन सभीने राजाके शरीरपर शंखचक्र की छापके दर्शन करके अत्यन्त सुख पाया। नाना प्रकारकी बहुतसी वस्तुएं भेंटमें आने लगी।

सभी लोग राजाके प्रेम की महिमा को गाते तो उसे सुनकर राजा लज्जित होते। वे अपने मनमें यही सोचते कि है यह सब भगवान् श्रीकृष्णाकी कृपा है। लोगों ने भी समझ लिया कि राजापर गुरुगोविन्दकी महती कृपा है। इसके बाद राजाने जहां पर दर्शन हुआ था, वहीं एक सुन्दर एवं विशाल मंदिर का निर्माण कराया। वे सदा-सर्वदा सेवा पूजा, भजनमें ही लगे रहते। एक बार कोई नेत्रहीन ब्राह्मण श्रीवैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग के द्वारपर नष्ट हुई नेत्र-ज्योतिको प्राप्त करनेके लिये धरना देकर पड़ गया। पड़े-पड़े उसको कई महीने व्यतीत हो गये। श्रीशंकरजीने उसे दो-चार बार स्वप्नमें आज्ञा दी कि -हठ छोड़ दो, घरको जाओ, ये नेत्र अब फिरसे तुम्हें नहीं मिलेंगे। परंतु उस ब्राह्मणने अपना हठ नहीं छोडा, द्वार पर पडा ही रहा।

उसके इस सच्चे हठयोग को देखकर भगवान् शिवने दयासे द्रवित होकर आज्ञा दी कि तुम आमेरनरेश पृथ्वीराज़ के अंगोछेसे अपने नेत्रोंको पोंछो तो तुम्हें नेत्र ज्योति प्राप्त हो जायगी। उस अन्धे ब्राह्मणने आकर राजा पृथ्वीराज से यह बात कहीं तो वे ब्राह्मणकी महिमाको विचारकर डर गये कि – ऐसा करना अनुचित है। परंतु ब्राह्मणके आग्रह एवं लोगोंके समझानेपर राजाने एक नवीन वस्त्र मंगवाकर उसे अपने शरीरसे छुवाकर ब्राह्मणको दे दिया। आँखों में लगाते ही उसे नेत्र ज्योति प्राप्त हो गई।

संवाद दर्शन
हिन्दी पाक्षिक

सलाहकार संपादक
देवेन्द्र मिश्र

संपादक
संजीव कुमार

विज्ञापन
संजीव कुमार सिन्हा

प्रसार व्यवस्था
देवेन्द्र नारायण

प्रकाशक व मुद्रक
बिमल कुमार

प्रिंटर्स
लोकवाणी प्रिंटिंग प्रेस, शशि काम्प्लेक्स, नाला रोड, कदमकुआँ पटना

पता
104-105, विश्व संवाद केंद्र सुर्या अपार्टमेंट, फ्रेजर रोड, पटना
पिन नंबर- 800 001
संपर्क = 0612 2216048

ई-मेल- vskpatna@gmail.com
vskbihar@gmail.com
वेबसाइट- www.vskbihar.com

'यह केवल स्नान नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक पुनर्जन्म है।" 04

महाकुम्भ का पाठ 05

महाकुम्भ में पहली बार पहुंचे बौद्ध भिक्षु, भंते व लामा 09

स्मरण की गई महारानी अहिल्याबाई 10

हिंदुत्व की चेतना, सनातन के चैतन्य को.....प्रणाम 11

विहिप मार्गदर्शक मंडल में हिन्दू जन्म दर, हिन्दू मंदिरों की सरकारी नियंत्रण से मुक्ति व पंच परिवर्तन पर मंथन 14

लोकमाता अहिल्यादेवी की दृष्टि राष्ट्रव्यापी थी – कैप्टन मीरा दवे 15

संघ के प्रचारक रहे वयोवृद्ध स्वयंसेवक का निधन 19

पाठकों के नाम पत्र

प्रिय पाठक,
सादर नमस्कार।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानंद होंगे। विदित हो की संवाद दर्शन पत्रिका राष्ट्र तथा प्रदेश की घटनाओं और महत्वपूर्ण बिन्दुओं को आधार बनाकर प्रकाशित हो रही है। आपका स्नेह हमेशा प्राप्त होता रहता है। पत्रिका द्वारा सदस्यों/ पाठकों के नाम, पता, दूरभाष तथा ई-मेल में सुधार के लिए योजना चलायी जा रही है। संवाद दर्शन परिवार आशा करते हैं कि पत्रिका आपके हाथों तक पहुंच रही होगी यदि नहीं पहुंच रही है तो आप हमारे दूरभाष पर संपर्क कर या हमारे पते पर पत्र लिखकर अपने पता का सुधार करवा सकते है।

शेष शुभ!

'यह केवल स्नान नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक पुनर्जन्म है।' - माया बैटनर

महाकुंभ नगर प्रयागराज : वसंत पंचमी के पावन अवसर पर जब सूर्य की पहली किरण संगम के जल पर पड़ी तो वातावरण में अद्भुत दिव्यता फैल गई। इस बेला में भारत ही नहीं, विश्वभर से आए श्रद्धालुओं ने त्रिवेणी संगम में आस्था की डुबकी लगाई।

निर्वाणी अनी अखाड़ा के साथ अमृत स्नान में शामिल हुईं इजरायल की प्रसिद्ध गायिका और संगीतकार माया बैटनर की आंखों में श्रद्धा व उत्साह के आंसू थे। कहा- जब मैंने जल में पहला कदम रखा तो मुझे ऐसा आभास हुआ जैसे किसी अदृश्य शक्ति ने मुझे प्रेम और शांति से भर दिया हो। यह केवल स्नान नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक पुनर्जन्म है।"

अमेरिका, यूके, इजरायल, फ्रांस, जर्मनी, स्विट्जरलैंड, कनाडा, चिली व जापान समेत कई देशों से आए विदेशी श्रद्धालु जीवन में पहली बार इस अद्वितीय आयोजन का हिस्सा बने। अखाड़ों के संतों के साथ उत्साह से त्रिवेणी स्नान करने पहुंचीं न्यूयार्क की बेकी मारिसन ने इसे आत्मा की शुद्धि और जीवन के वास्तविक अर्थ समझने का स्थल बताया। कहा- "मैंने सुना था कि गंगा स्नान से जीवन के पाप धुल जाते हैं, आज हजारों श्रद्धालुओं की अपार श्रद्धा को मैने मां गंगा की गोद में समाते देखा।"

इस पवित्र स्नान का हिस्सा बनने के लिए अनी

इजरायल से आईं राया वैखांस्की कहती हैं कि हमारी आत्मा गंगा के जल में घुल गई। यह सिर्फ पानी नहीं, बल्कि एक दिव्य स्पर्श है, जिसने हमारे भीतर शांति और ऊर्जा का संचार कर दिया। स्विट्जरलैंड से आए ओलिवर बेयार्ड बचपन से भारतीय संस्कृति से प्रभावित थे, लेकिन कुंभ में शामिल होने का यह उनका पहला अनुभव था....

अखाड़े की शोभायात्रा में शक्तिधाम आश्रम की साईं मां लक्ष्मी देवी मिश्रा के साथ सैकड़ों विदेशी साधक शामिल हुए। इनमें इजरायल से आईं राया वैखांस्की कहती हैं कि हमारी आत्मा गंगा के जल में घुल गई। यह सिर्फ पानी नहीं, बल्कि एक दिव्य स्पर्श है, जिसने हमारे भीतर शांति और ऊर्जा का संचार कर दिया।

स्विट्जरलैंड से आए ओलिवर बेयार्ड बचपन से भारतीय संस्कृति से प्रभावित थे, लेकिन कुंभ में शामिल होने का यह उनका पहला अनुभव था। उन्होंने कहा कि यहां का वातावरण, गूंजते मंत्र, संतों का आशीर्वाद और गंगा का निर्मल जल, इन सबने मुझे भीतर से प्रकाशित किया।

आजादी के 60 साल तक एक साधारण हिन्दू, जिन्हें 'हिन्दू रेट ऑफ ग्रोथ' कहकर अपमानित किया गया – वह अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत रहा। उसने आठवीं शताब्दी से इस्लामी आक्रांताओं के सतत मजहबी हमले झेले...

महाकुम्भ का पाठ

प्रयागराज महाकुम्भ अपनी परिणति पर है। करोड़ों श्रद्धालु अपनी आस्था के अनुरूप त्रिवेणी में डुबकी लगाकर सुरक्षित घर लौट चुके हैं। इस दौरान दो हादसे हुए, जिसने कुछ सुलगते प्रश्नों को पीछे छोड़ दिया। इसमें भगदड़ का पहला दुर्भाग्यपूर्ण मामला प्रयागराज में 28-29 जनवरी की रात सामने आया, जिसमें मृतकों का सरकारी आंकड़ा 30 है। दूसरी दुखद घटना नई दिल्ली रेलवे स्टेशन में 15 फरवरी को घटी, जिसमें 18 तीर्थयात्री मारे गए। क्या इन दुर्घटनाओं को रोका जा सकता था? यदि हां, तो इसके लिए कौन जिम्मेदार है? सरकार? श्रद्धालु? या फिर दोनों? वास्तव में, इन हादसों का एक बड़ा कारण प्रशासन और तीर्थयात्रियों द्वारा देश में बदलते मानस का संज्ञान न लेना और उसे आत्मसात नहीं करना है।

महाकुम्भ में श्रद्धालु इतनी बड़ी संख्या में क्यों आए? इसके मुख्यत: तीन कारण हैं – आर्थिक समृद्धि, अपनी पहचान के प्रति जागृति और सुरक्षा का भाव। आजादी के 60 साल तक एक साधारण हिन्दू, जिन्हें 'हिन्दू रेट ऑफ ग्रोथ' कहकर अपमानित किया गया – वह अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत रहा। उसने आठवीं शताब्दी से इस्लामी आक्रांताओं के सतत मजहबी हमले झेले। असंख्य लोगों का तलवार के बल पर मतांतरण हुआ, तो उनके मान-बिंदुओं और मंदिरों (अयोध्या, सोमनाथ, काशी, मथुरा सहित) को जमींदोज कर दिया गया। इस दौरान पवित्र नगरियां – अयोध्या, काशी, मथुरा, कटासराज, हरिमंदिर साहिब, सारनाथ, बोधगया और शारदा शक्तिपीठ आदि या तो ध्वस्त होते रहे या अपवित्र किया जाता रहा।

वर्ष 1947 में इस्लाम के नाम पर रक्तरंजित विभाजन और अंग्रेजों से स्वतंत्रता के बाद खंडित भारत में अपेक्षा थी कि जैसे गांधी-पटेल के नेतृत्व में सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण शुरू हुआ, वैसे ही अयोध्या, काशी, मथुरा सहित अन्य ऐतिहासिक अन्यायों का परिमार्जन सभ्यतागत पुनरोद्धार का चक्र पूरा करेगा और हिन्दू अपनी संस्कृति पर फिर से गर्व कर सकेंगे....

इसके बाद आए यूरोपीय आक्रांताओं ने अपने अनेकों षड़यंत्रों में से एक – 'मैकॉले शिक्षा प्रणाली' से सनातनियों को उनकी आस्था-पहचान के प्रति हीन-भावना से भरना शुरू किया।

वर्ष 1947 में इस्लाम के नाम पर रक्तरंजित विभाजन और अंग्रेजों से स्वतंत्रता के बाद खंडित भारत में अपेक्षा थी कि जैसे गांधी-पटेल के नेतृत्व में सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण शुरू हुआ, वैसे ही अयोध्या, काशी, मथुरा सहित अन्य ऐतिहासिक अन्यायों का परिमार्जन सभ्यतागत पुनरोद्धार का चक्र पूरा करेगा और हिन्दू अपनी संस्कृति पर फिर से गर्व कर सकेंगे। परंतु ऐसा नहीं हुआ, क्योंकि पं. नेहरू के लिए वे हिन्दू 'सांप्रदायिक' थे, जो अपनी संस्कृति, परंपराओं और मानबिंदुओं पर गौरवान्वित थे। येन-केन-प्रकारेण सभी प्रकार की आर्थिक-सामाजिक-राजनीतिक चुनौतियों के बाद बीते एक दशक से हिन्दू समाज अपनी पहचान के प्रति पहले से कहीं अधिक जागरूक और मुखर है। शताब्दियों बाद सनातनियों को अपनी संस्कृति पर गर्व करने का अवसर मिला है। कुम्भ मात्र आध्यात्मिक आस्था पर्व नहीं, यह मानव को सनातन के विराट और समग्र स्वरूप, जिसमें बहुलतावाद-समावेश और प्रकृति-ब्रह्मांड के कल्याण की भावना है – उससे जोड़ने का संगम है। त्रिवेणी सबके लिए है। इसमें जाति-वर्ग की कोई जगह नहीं। कुम्भ दैवीय ऊर्जा का एक पवित्र योग है, जिसमें सूर्य के मकर राशि और बृहस्पति के कुम्भ राशि में प्रवेश करने पर एक दिव्य शक्ति का अद्भुत संयोग बनता है। मुझे अपने प्रयागराज प्रवास में जूना अखाड़ा के आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरी जी महाराज के शिविर में रहने का अवसर मिला। जब स्वामी जी से एक उच्च-मध्यवर्ग के जिज्ञासु सज्जन ने पूछा कि वे किस ईश्वर की उपासना करें, तब उनका उत्तर था कि ग्रामदेवता, कुलदेवी और पूर्वजों के बाद वे किसी भी ईश्वर की आराधना कर सकते है। उन्होंने अपने इष्टदेव को उन पर थोपने का प्रयास नहीं किया। यह सनातन संस्कृति का ही मौलिक चरित्र है, जिसमें विचारों-असहमति की स्वतंत्रता है, जो 'मैं ही सच्चा, तू झूठा' संकीर्ण अवधारणा से मुक्त है।

समाज में बदलते चिंतन का संज्ञान लेकर केंद्र और उत्तर प्रदेश सरकार ने महाकुम्भ के लिए मिलकर ₹12,000 करोड़ से अधिक का बजटीय प्रावधान, तो इसके आयोजन में विभिन्न स्तर पर अभूतपूर्व व्यवस्थाओं का प्रबंध किया। परंतु प्रशासनिक तंत्र इस सांस्कृतिक चेतना और आस्था के ज्वार का सही आकलन नहीं कर पाया। कई अधिकारियों-कर्मचारियों ने अपेक्षित भावना के प्रतिकूल इसे नियमित दायित्व की तरह लिया, तो कई अपने कर्तव्यों के प्रति ही उदासीन और

हज यात्रा के दौरान मक्का में पर्याप्त प्रबंध होने के बावजूद आठ से अधिक भगदड़ की घटनाएं हो चुकी हैं। इनमें सबसे भीषण हादसा वर्ष 2015 का था, जिसमें 2,400 से अधिक लोग मारे गए। इसी तरह वर्ष 2016-24 के बीच नाइजीरियाई चर्चों में भगदड़ के कई घटनाओं में 100 से अधिक लोगों की जान जा चुकी है...

इससे झुंझलाते रहे। अपनी संस्कृति के प्रति बहुत से गौरवान्वित हिन्दू भी इस बात को नहीं समझ पाए कि उत्साह-उमंग के साथ अनुशासन और नागरिक-कर्तव्यबोध भी आवश्यक है। वे महाकुम्भ या फिर अपने अन्य पवित्रस्थलों पर अनियंत्रित भीड़ के बजाय आस्थावान तीर्थयात्री बनकर जाए। ऐसा नहीं है कि तीर्थस्थलों में दुर्घटनाएं केवल भारत में होती है। हज यात्रा के दौरान मक्का में पर्याप्त प्रबंध होने के बावजूद आठ से अधिक भगदड़ की घटनाएं हो चुकी हैं। इनमें सबसे भीषण हादसा वर्ष 2015 का था, जिसमें 2,400 से अधिक लोग मारे गए। इसी तरह वर्ष 2016-24 के बीच नाइजीरियाई चर्चों में भगदड़ के कई घटनाओं में 100 से अधिक लोगों की जान जा चुकी है।

कुछ स्वयंभू सेकुलरवादियों ने महाकुम्भ पर कटाक्ष करते हुए पूछा – "क्या गंगा में डुबकी लगाने से गरीबी दूर होगी, भूख मिटेगी?" पहली बात, महाकुम्भ या कोई भी आस्था से जुड़ा आयोजन गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम का भाग नहीं है। रही बात भूख की, तो महाकुम्भ में 500 से अधिक छोटे-बड़े (निःशुल्क सहित) भंडारे चल रहे हैं। इससे पहले वर्ष 2013 और 2019 में क्रमशः 12 करोड़ और 24 करोड़ श्रद्धालु कुम्भ आए थे। भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) के अनुसार, 2019 के प्रयागराज अर्धकुम्भ आयोजन से सरकार को ₹1.2 लाख करोड़ का राजस्व प्राप्त हुआ और इससे 6 लाख से अधिक रोजगार के अवसर सृजन हुए। इस महाकुम्भ में 60 करोड़ से अधिक श्रद्धालु स्नान कर चुके हैं। इनमें अति-गरीब से लेकर संपन्न व्यक्ति शामिल है, जिसमें मध्यवर्ग परिवारों की संख्या सर्वाधिक है। इनमें से लाखों ने अयोध्या-काशी में भी दर्शन किए। यदि प्रत्येक मध्य वर्ग तीर्थयात्री औसतन ₹4,000-5,000 व्यय कर रहा है, तो स्वाभाविक रूप से स्थानीय अर्थव्यवस्था और उससे जुड़े लोगों को कितना लाभ होगा, इसका सहज अनुमान लगाया जा सकता है।

प्रयागराज, काशी या अयोध्या सहित अन्य तीर्थस्थल कोई साधारण नगर नहीं है और ना ही वे केवल आवास, पर्यटन या रोजगार का साधन मात्र हैं। पर्यटन की दृष्टि से दिल्ली, जयपुर और आगरा को पारंपरिक रूप से 'स्वर्णिम त्रिकोण' माना जाता है। बदलते परिप्रेक्ष्य में प्रयागराज, काशी और अयोध्या को भारत के 'अध्यात्म त्रिकोण' के रूप में विकसित किया जाना चाहिए। इन क्षेत्रों में आधारभूत ढांचे का विकास इस प्रकार किया जाए कि इन नगरों का कालजयी आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक सत्व अक्षुण्ण बना रहे। **बलबीर पुंज**

बौद्ध संस्कृति संगम की ओर से आयोजित यह कार्यक्रम बौद्ध एवं सनातन के बीच राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आपसी समन्वय, समता, समरसता, सद्भाव एवं करुणा मैत्री विकसित करने में मील का पत्थर साबित होगा। महाकुम्भ पहुंचे भंते, लामा व बौद्ध भिक्षुओं का मुख्यमंत्री, जूना अखाड़े के आचार्य महामण्डलेश्वर स्वामी अवधेशानन्द गिरि जी ने अंगवस्त्र एवं माला पहनाकर स्वागत किया...

महाकुम्भ में पहली बार पहुंचे बौद्ध भिक्षु, भंते व लामा

महाकुम्भ में पहली बार दुनिया के कई देशों के भंते, लामा व बौद्ध भिक्षुओं का आगमन हुआ है। सभी बौद्ध भिक्षु व लामा संगम स्नान करेंगे एवं साधु संतों से भेंटवार्ता करेंगे। बौद्ध संस्कृति संगम की ओर से आयोजित यह कार्यक्रम बौद्ध एवं सनातन के बीच राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आपसी समन्वय, समता, समरसता, सद्भाव एवं करुणा मैत्री विकसित करने में मील का पत्थर साबित होगा। महाकुम्भ पहुंचे भंते, लामा व बौद्ध भिक्षुओं का मुख्यमंत्री, जूना अखाड़े के आचार्य महामण्डलेश्वर स्वामी अवधेशानन्द गिरि जी ने अंगवस्त्र एवं माला पहनाकर स्वागत किया। भारत के अलावा नेपाल, भूटान, श्रीलंका, म्यांमार, तिब्बत, लाओस, थाईलैंड, वियतनाम आदि देशों से बौद्ध भंते शील रतन, धम्मपाल बौद्ध संत, भंते शीलवचन सैकड़ों की संख्या में भंते आए हैं।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंगलवार को प्रयागराज दौरे पर बौद्ध महाकुम्भ यात्रा का शुभारंभ किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि सभी उपासना विधियों का एक मंच पर आना अभिनंदनीय है। हिन्दू और बौद्ध एक ही वटवृक्ष की शाखाएं हैं। यदि ये एक ही मंच पर आ जाएं तो यह दुनिया में सबसे शक्तिशाली वटवृक्ष बनेगा जो उन्हें छांव भी देगा और उनकी सुरक्षा भी सुनिश्चित करेगा।

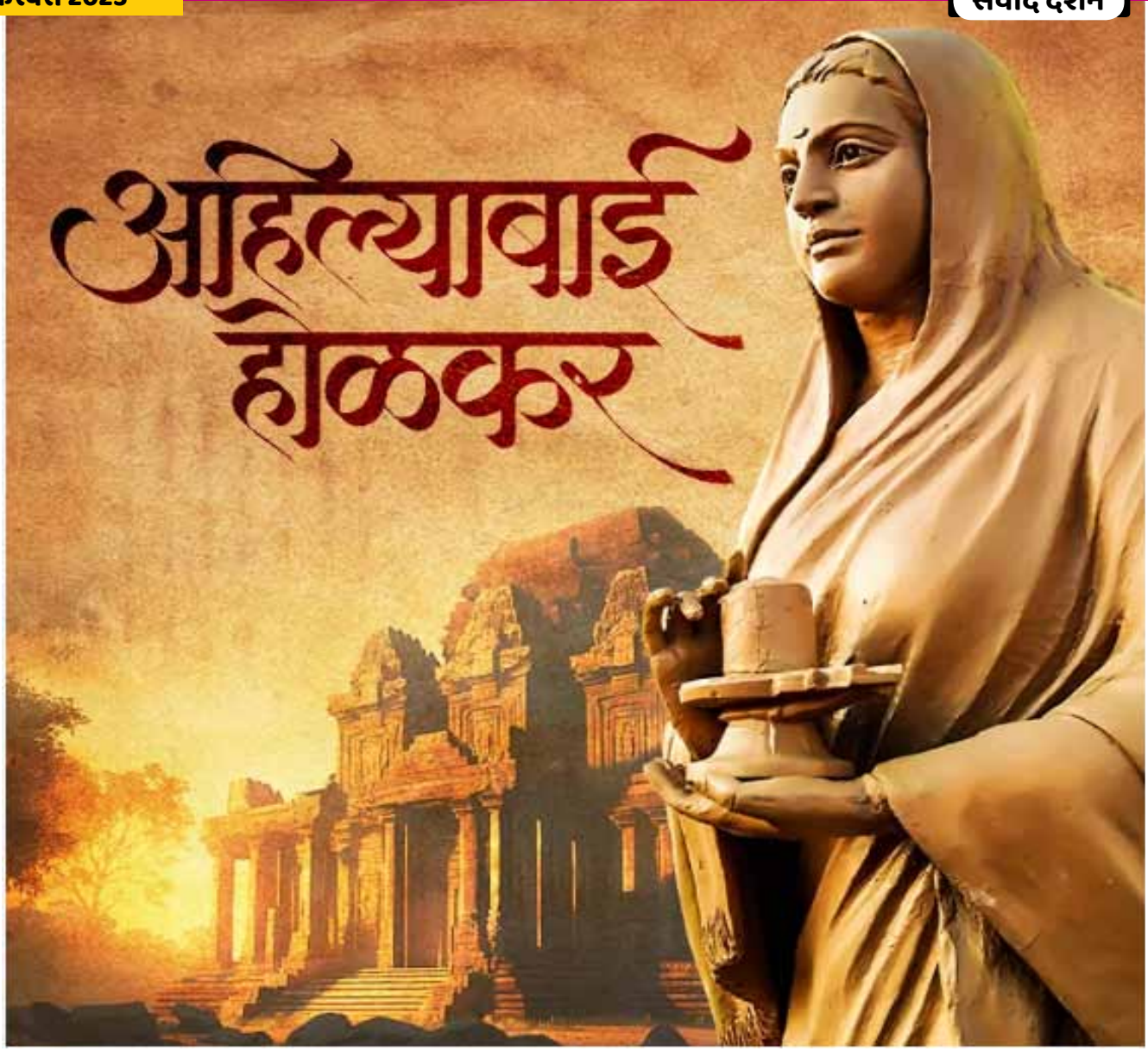

मंदिर निर्माण के बाद अधिकांश लोग चले गए। वर्तमान में तीन परिवार ही गांव में रह गए हैं। उन लोगों ने यहां के स्थानीय लोगों को इस विधा में प्रशिक्षित किया और यह एक प्रमुख कला का केंद्र बनकर उभरा। 29 जनवरी को पत्थरकट्टी की मूर्तियों को जीआई टैग मिला। कार्यक्रम में उन कलाकारों को भी सम्मानित किया गया...

स्मरण की गई महारानी अहिल्याबाई

गया के पत्थरकट्टी गांव में महारानी अहिल्याबाई होल्कर को स्मरणाजलि दी गई। महारानी अहिल्याबाई के त्रि शताब्दी जन्म समारोह को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सह संपर्क प्रमुख रमेश पप्पा जी ने कहा कि महारानी ने जिन विषम परिस्थितियों में धर्मार्थ और सेवार्थ कार्य किया वह विश्व के इतिहास में एक अप्रतिम उदाहरण है। सभी स्थानों पर महारानी का 300वां जन्म समारोह मनाया जा रहा है, लेकिन इस स्थान की कुछ विशेषताएं हैं। महारानी ने गया के विष्णुपद मंदिर के जीर्णोद्धार के लिए राजस्थान के 300 गौड़ ब्राह्मण कलाकारों को यहाँ ने बसाया था। गांव में उपलब्ध काले ग्रेनाइट पत्थर को तराश कर विष्णुपद मंदिर का निर्माण किया गया था। मंदिर निर्माण के बाद अधिकांश लोग चले गए। वर्तमान में तीन परिवार ही गांव में रह गए हैं। उन लोगों ने यहां के स्थानीय लोगों को इस विधा में प्रशिक्षित किया और यह एक प्रमुख कला का केंद्र बनकर उभरा। 29 जनवरी को पत्थरकट्टी की मूर्तियों को जीआई टैग मिला। कार्यक्रम में उन कलाकारों को भी सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्र कार्यवाह डॉ मोहन सिंह, क्षेत्र के सम्पर्क प्रमुख अनिल कुमार, प्रान्त प्रचारक उमेश जी समेत कई प्रमुख व्यक्ति उपस्थित थे।

संजीव कुमार

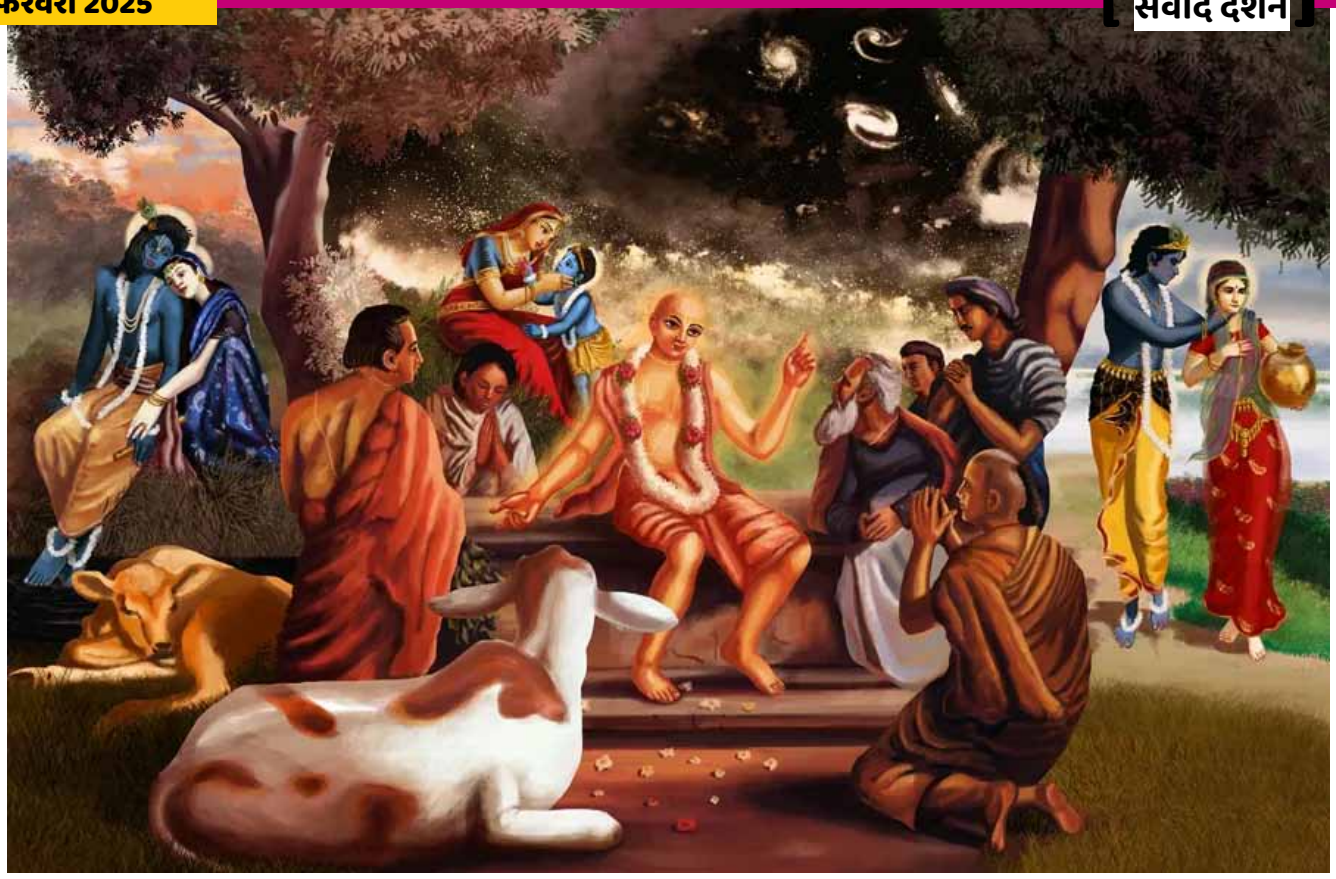

हजार से ज्यादा किलोमीटर का यह महामार्ग, इन दिनों उत्सवी वातावरण में है। दिन-रात प्रवास करने वाले लोगों में गजब का उत्साह है। इतने लंबे, थका देने वाले प्रवास के बावजूद भी, उन सबके चेहरे पर आनंद है। जाने वालों के चेहरे पर उत्सुकता छलक रही है, तो वापस आने वाले लोगों के चेहरे पर कृतार्थता..!

हिंदुत्व की चेतना, सनातन के चैतन्य को.....प्रणाम

राष्ट्रीय राजमार्ग 44, बेंगलुरु से रीवा और उसके आगे जाने वाला राजमार्ग। इस रास्ते पर, अलग-अलग राज्यों की नंबर प्लेट लगाए हुए हजारों कार, जीप, टेम्पो ट्रॅवलर, बस, ट्रक.. इन सब का महाकाय प्रवाह बना हुआ है। लगभग प्रत्येक वाहन पर भगवा ध्वज है। किसी के झंडे पर श्रीराम का चित्र बना है, तो किसी ने हनुमान जी को पसंद किया है। रास्ते में भगवे झंडे की अनेक छोटी-छोटी दुकानें हैं। जिनके वाहन पर यह नहीं है, वह गाड़ी रोक कर खरीद रहे हैं।

रास्ते के सभी ढाबे, होटल, पेट्रोल पंप, लोगों से भरे पड़े हैं। जहां भी थोड़ा पानी दिखा, पेड़ की छांव देखी, या मंदिर दिखा, दूर से आने वाली गाड़ियां वहीं रुक जाती हैं। गाड़ी के प्रवासी अपनी पथारी पसार के, थोड़ा बहुत विश्राम कर रहे हैं। कुछ नाश्ता / भोजन भी चल रहा है। हजार से ज्यादा किलोमीटर का यह महामार्ग, इन दिनों उत्सवी वातावरण में है। दिन-रात प्रवास करने वाले लोगों में गजब का उत्साह है। इतने लंबे, थका देने वाले प्रवास के बावजूद भी, उन सबके चेहरे पर आनंद है। जाने वालों के चेहरे पर उत्सुकता छलक रही है, तो वापस आने वाले लोगों के चेहरे पर कृतार्थता..! इन प्रवासियों में सभी भाषाओं के, सभी आयु वर्ग के, सभी आर्थिक स्तर के लोग शामिल हैं। इनमें कोई भेदभाव नहीं है। ट्रक में भरकर जा रहे कर्नाटक के भाविकों से वैसा ही व्यवहार हो रहा है, जैसा इनोवा में चल रहे तेलंगाना के प्रतिष्ठित परिवार से। यह सारे लोग सनातन की अक्षुण्ण यात्रा के प्रवासी हैं। यह सभी, प्रयागराज महाकुम्भ के यात्री हैं।

रास्ते में अनेक स्थानों पर लोगों ने निःशुल्क रहने की व्यवस्था की है। अनेक स्थानों पर भंडारे चल रहे हैं। स्थान – स्थान पर कुम्भ यात्रियों के स्वागत के बैनर लगे हुए हैं। सिवनी से आगे प्रयाग तक, सरकार ने महामार्ग के सभी टोल खोल दिए हैं। अब यह पूरा रास्ता निःशुल्क है। उत्सवी जनता के साथ संवेदनशील सरकार खड़ी है।

हालांकि रास्ता सुगम नहीं है। हजारों – लाखों प्रवासियों के कारण रास्ते पर जाम लगना या रास्ते को कुछ समय के लिए विवशतावश बंद करना, यह आम बात है। केरल, तमिलनाडु, तेलंगाना, कर्नाटक, महाराष्ट्र, आंध्र से आने वाले सभी भाविकों को इसका पूरा अंदाज है। यह यात्रा कष्टप्रद है, 10-20 किलोमीटर चलना पड़ता है, इन सब की उन्हें जानकारी है।

अचरज भरी नजरों से भारत को देख रहा है। सनातन की प्रस्फुटित होती शक्ति को देखकर भौचक हैं। वे अब भारत को और अच्छे से समझने का प्रयास कर रहे हैं। इस वर्ष भारत में विदेशी पर्यटक तो रिकॉर्ड संख्या में आएंगे ही, किंतु विश्व के विभिन्न विश्वविद्यालयों में चल रहे 'इंडोलॉजी' के कोर्स को रिकॉर्ड विद्यार्थी मिलेंगे...

किंतु फिर भी वह सारे आनंदित हैं। प्रमुदित हैं..! यह अद्भुत है। किसी भी परिपेक्ष में, किसी भी मानक पर, किसी भी कसौटी पर यह शब्दशः अभूतपूर्व है..! सनातन की ऐसी ताकत इससे पहले कभी नहीं देखी थी। पिछले कुम्भ में भी नहीं। 56 करोड़ से ज्यादा सनातनी, संगम में डुबकी लगा चुके हैं। अर्थात, कुम्भ मेला समाप्त होने में अभी कुछ दिन बाकी हैं, किंतु आधे से ज्यादा देश कुम्भ हो आया है। यूरोप में सबसे ज्यादा जनसंख्या का देश है – जर्मनी। जर्मनी में 8.45 करोड़ लोग रहते हैं। मजेदार बात यह कि पूरे जर्मनी की लोकसंख्या से भी ज्यादा सनातनी श्रद्धालुओं ने मात्र एक दिन में प्रयाग महाकुम्भ में, गंगा जी में स्नान किया है। विश्व चकित है।

अचरज भरी नजरों से भारत को देख रहा है। सनातन की प्रस्फुटित होती शक्ति को देखकर भौचक हैं। वे अब भारत को और अच्छे से समझने का प्रयास कर रहे हैं। इस वर्ष भारत में विदेशी पर्यटक तो रिकॉर्ड संख्या में आएंगे ही, किंतु विश्व के विभिन्न विश्वविद्यालयों में चल रहे 'इंडोलॉजी' के कोर्स को रिकॉर्ड विद्यार्थी मिलेंगे।

कुम्भ ने भारत के अर्थतंत्र को जबरदस्त गति दी है। कुम्भ की आलोचना करने वालों की समझ में शायद यह बात नहीं आई है। कुम्भ का प्रभाव मात्र प्रयागराज, या काशी या अयोध्या तक ही सीमित नहीं है, प्रयाग को जाने वाले प्रत्येक मार्ग, राजमार्ग, महामार्ग पर लाखों लोगों के जीवन में, इस कुम्भ ने आत्मविश्वास का प्रकाश लाया है। टूरिस्ट एजेंसी वाले, कार / टैक्सी / बस / ट्रक वाले, ड्राइवर, पेट्रोल पंप, ढाबे वाले, छोटी-छोटी वस्तुएं बेचने वाले, होटल चलाने वाले, सब्जी – फल की बिक्री करने वाले, झंडा बेचने वाले, टायर का काम करने वाले.. सभी आनंद में हैं। इनमें से अनेकों ने, पिछले पंद्रह – बीस दिनों में पूरे वर्ष का व्यवसाय कर लिया है। इन्हें मालूम है कि कुम्भ के प्रवासी कहां रुकेंगे और कहां नहीं। इसलिए कुम्भ जाने वाले सभी रास्ते भगवा ध्वज से पटे पड़े हैं। प्रत्येक

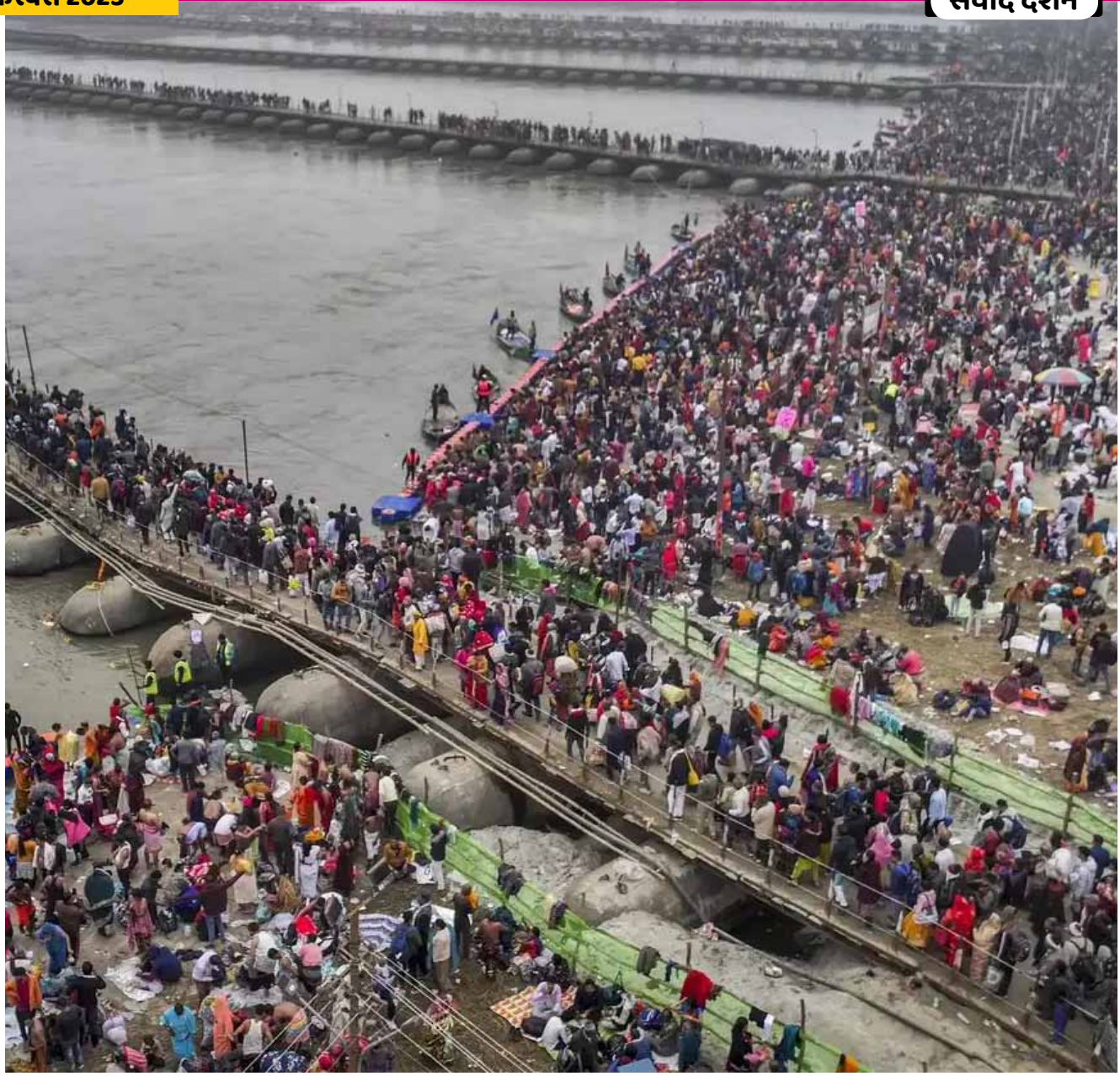

यह सारे भाविक हैं, श्रद्धालु हैं, आस्थावान हैं। किंतु इनमें से अनेकों को अभी भी हिन्दुत्व या सनातन का अर्थ ठीक से समझा नहीं है। छत्रपति शिवाजी महाराज को समाप्त करने के लिए महाराष्ट्र में आया हुआ मिर्जा राजा जयसिंह (उसकी शब्दावली में) कट्टर सनातनी था, कट्टर हिन्दू था...

दुकानदार ने बड़े ही गर्व के साथ अपने प्रतिष्ठान पर भगवा झंडा लहराया है। इस पूरी ताकत को हिन्दुत्व की (या सनातन की) शक्ति समझना गलत होगा। यह सारे भाविक हैं, श्रद्धालु हैं, आस्थावान हैं। किंतु इनमें से अनेकों को अभी भी हिन्दुत्व या सनातन का अर्थ ठीक से समझा नहीं है। छत्रपति शिवाजी महाराज को समाप्त करने के लिए महाराष्ट्र में आया हुआ मिर्जा राजा जयसिंह (उसकी शब्दावली में) कट्टर सनातनी था, कट्टर हिन्दू था। प्रतिदिन भगवान एकलिंग जी की पूजा किए बगैर वह जल भी ग्रहण नहीं करता था। हिन्दू संस्कृति के सारे तीज-त्यौहार उत्साह से मनाता था। इसलिए स्वतः को कट्टर हिन्दू कहता था। किंतु वह किसके लिए काम कर रहा था..? हिन्दुओं को मिटाने पर तुले हुए औरंगजेब के लिए, हिन्दुओं का नरसंहार करने वाले, मंदिरों को नष्ट करने वाले, इस्लामी कट्टरपंथी आलमगीर औरंगजेब के लिए..! वह महाराष्ट्र में किस लिए आया था? तो हिन्दुओं की रक्षा करने वाले, हिन्दू पदपातशाही का स्वप्न साकार करने में लगे शिवाजी महाराज को मिटाने के लिए। यह हमारा दुर्भाग्य है कि हम व्यक्तिगत आस्था / श्रद्धा / कर्मकांड को ही सनातन समझ बैठते हैं। इसलिए श्री राम जन्मभूमि मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा से हर्षित उत्तर प्रदेश, हिन्दुत्व के विरोधियों को चुनकर देता है। बांग्लादेश के हिन्दू नरसंहार पर हिन्दू खामोश रहता है। सनातन को दी हुई गालियों को चुपचाप सहन कर लेता है।

सनातन का, हिन्दुत्व का सही अर्थ है, संपूर्ण समाज का, राष्ट्र का, समष्टि का कल्याण। इस कल्याण के लिए जो, जो आवश्यक है, वह सब करना, यही सनातन है। इस लोक कल्याण को नष्ट और भ्रष्ट करने वाली ताकत का सामना करना, उसे पराजित करना, यही है सनातन।

प्रशांत पोळ

संतों ने आग्रह किया है कि सभी मन्दिर सरकारी नियंत्रण से मुक्त किये जाएं, सरकारी नियंत्रण स्थापित करने वाले कानून हटाए जाएं और मन्दिरों का प्रबंधन आस्था रखने वाले भक्तों को सौंपा दिया जाये...

विहिप मार्गदर्शक मंडल में हिन्दू जन्म दर, हिन्दू मंदिरों की सरकारी नियंत्रण से मुक्ति व पंच परिवर्तन पर मंथन

विश्व हिन्दू परिषद के केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल की बैठक 24 जनवरी, 2025 को महाकुम्भ में सम्पन्न हुई, जिसमें देश के प्रमुख संत उपस्थित रहे। केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल विश्व हिन्दू परिषद की वैधानिक इकाई है। मार्गदर्शक मण्डल के मार्गदर्शन में विश्व हिन्दू परिषद आरम्भ से ही कार्य करता आया है। बैठक के उपरान्त आयोजित पत्रकार वार्ता में मंच पर उपस्थित पूज्य संत जगतगुरु आचार्य महामंडलेश्वर अवधेशानन्द गिरि जी, तथा अध्यक्षता कर रहे आचार्य महामंडलेश्वर विशोकानन्द जी, विहिप के केन्द्रीय अध्यक्ष आलोक कुमार जी, केन्द्रीय महामंत्री बजरंग लाल बागड़ा जी ने बताया कि मार्गदर्शक मण्डल के पूज्य संतों ने विश्व के हिन्दू समाज की धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आवश्यकताएँ, चुनौतियाँ और संकटों के संदर्भ में विचार करते हुए हिन्दू समाज का मार्गदर्शन किया है।

कई मुख्य बिंदुओं पर चर्चा की गयी

* देश भर में हिन्दू मन्दिरों को सरकारी नियंत्रण से मुक्त करवाने का जनजागरण अभियान प्रारम्भ हुआ है। आन्ध्र प्रदेश के विजयवाड़ा से अभियान का शंखनाद हो चुका है। संतों ने आग्रह किया है कि सभी मन्दिर सरकारी नियंत्रण से मुक्त किये जाएं, सरकारी नियंत्रण स्थापित करने वाले कानून हटाए जाएं और मन्दिरों का प्रबंधन आस्था रखने वाले भक्तों को सौंपा दिया जाये।

* हिन्दू समाज के घटते जन्म दर के कारण हिन्दू जनसंख्या में हो रहा असन्तुलन है। हिन्दू समाज के अस्तित्व की रक्षा के लिए हर हिन्दू परिवार में कम से कम तीन बच्चों का जन्म होना चाहिए। समाज की जनसंख्या को संतुलित बनाये रखने के लिए हिन्दू समाज की जन्म दर को बढ़ाने की आवश्यकता है।

* वक्फ बोर्ड के निरंकुश व असीमित अधिकारों को नियंत्रित करने के लिए केन्द्र सरकार कानून सुधार अधिनियम लाने वाली है, उसका केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल स्वागत करती है और यह आह्वान करती है कि यह कानून पारित होना चाहिए।

* 1984 के धर्म संसद से लेकर अयोध्या, मथुरा, काशी तीनों मन्दिरों की प्राप्ति के लिए पूज्य संत समाज, हिन्दू समाज, विश्व हिन्दू परिषद संकल्पबद्ध था, है और भविष्य में भी रहेगा।

* भारत के उत्थान के लिए सामाजिक समरसता, पर्यावरण की रक्षा, कुटुम्ब प्रबोधन से हिन्दू संस्कारों का सिंचन तथा सामाजिक कुप्रथाओं का निर्मूलन, समाज में राष्ट्रीय चारित्र्य के विकास के लिए आवश्यक है।

बैठक में प्रमुख रूप से जगतगुरु शंकराचार्य वासुदेवानन्द सरस्वती जी, आचार्य महामंडलेश्वर अवधेशानन्द गिरि जी, आचार्य महामंडलेश्वर विशोकानन्द जी, महामंडलेश्वर विश्वात्मानन्द भारती जी, महामंडलेश्वर बालकानन्द जी, स्वामी चिदानंद मुनि जी, स्वामी राजेंद्र देवाचार्य जी, स्वामी कौशल्यानन्द गिरि जी, स्वामी अश्विलेश्वरानन्द जी, आदि से मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

मातृशक्ति को घर तक सीमित नहीं रहना चाहिए, घर में होने वाले संस्कार समाज का निर्माण करते हैं और समाज से राष्ट्र का निर्माण होता है। इसलिए अहिल्यादेवी के कार्य का एक अंश हममें भी पनपना चाहिए....

लोकमाता अहिल्यादेवी की दृष्टि राष्ट्रव्यापी थी – कैप्टन मीरा दवे

चौंडी में पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी अभिवादन समारोह में कैप्टन मीरा दवे (से.नि.) ने कहा कि अहिल्यादेवी होलकर के रूप में चौंडी की भूमि पर ही 300 वर्ष पूर्व बलिदान, न्याय और धर्म के वटवृक्ष का रोपण हुआ था। उन्होंने मालवा प्रांत में छत्रपति शिवाजी महाराज का स्वराज्य साकार किया था। अहिल्यादेवी का लोक कल्याणकारी राज्य यानी धर्माधिष्ठीत सत्तानीति का आदर्श है।

इस अवसर पर राष्ट्र सेविका समिति की केंद्रीय कार्यकारिणी सदस्या भाग्यश्री साठे, महर्षी कर्वे स्त्री शिक्षण संस्था की उपाध्यक्षा स्मिता कुलकर्णी, सचिव डॉ. पी. वी. शास्त्री भी उपस्थित रहीं। मीरा दवे ने कहा, "लोकमाता अहिल्यादेवी की दृष्टि राष्ट्र व्यापक थी। मातृशक्ति को घर तक सीमित नहीं रहना चाहिए, घर में होने वाले संस्कार समाज का निर्माण करते हैं और समाज से राष्ट्र का निर्माण होता है। इसलिए अहिल्यादेवी के कार्य का एक अंश हममें भी पनपना चाहिए।"

भाग्यश्री साठे ने आह्वान किया कि तेजस्वी, धर्मनिष्ठ, न्यायप्रिय, लोक प्रशासक और सशक्त नेतृत्व धारण करने वाली अहिल्यादेवी के जीवन को समाज जीवन में पहुंचाना चाहिए। उन्होंने कहा कि "हम जिस क्षेत्र में कार्यरत हैं, वहां अहिल्यादेवी का जीवनचरित्र पहुंचाएं। इसके लिए शोधकार्य, व्याख्यान, नाटक, नृत्य जैसे आयामों का उपयोग करना चाहिए। अहिल्यादेवी के नाम से संपूर्ण देश में विमर्श खड़ा रहना चाहिए।" समारोह के उद्घाटन सत्र में महाराष्ट्र विधान परिषद के सभापति व अहिल्यादेवी होलकर के वंशज राम शिंदे ने कहा, कि "व्यक्तिगत जीवन में कई दुःख होने के बावजूद अहिल्यादेवी ने राष्ट्रनिर्माण और जनसेवा का कार्य अविरत जारी रखा। सामाजिक न्याय, महिला कल्याण, व्यापार, कृषि और न्याय प्रणाली में किया गया कार्य आज भी हमारे लिए दिशादर्शक है। संपूर्ण राष्ट्र के लिए अहिल्यादेवी एक प्रेरणास्त्रोत हैं।"

स्वास्थ्य कारणों से कार्यक्रम में प्रत्यक्ष उपस्थित रहने में असमर्थ जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय की कुलपति डॉ. शांतीश्री पंडित ने वीडियो माध्यम से अपने संदेश में कहा कि पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होलकर ने 300 वर्ष पूर्व महिला आधारित विकास कार्य किया। आज आत्मनिर्भर भारत के लिए अहिल्यादेवी का लोकराज्य सच्चे अर्थों में मार्गदर्शक है।

इस अवसर पर राज्य की महिला व बाल कल्याण, सार्वजनिक स्वास्थ्य राज्य मंत्री मेघना बोर्डीकर, पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ. भारती पवार, विधायक मोनिका राजले उपस्थित रहीं। कार्यक्रम में एकता मासिक पत्रिका के अहिल्यादेवी हिंदी विशेषांक का विमोचन किया गया। साथ ही चिन्मयी मूले द्वारा लिखित और देविदास देशपांडे द्वारा अनुवादित 'अदम्य चैतन्याची महाराणी' पुस्तकों का विमोचन किया गया। कलावर्धिनी नृत्य समूह की अरुंधती पटवर्धन व उनके समूह ने अहिल्यादेवी की जीवनी पर नृत्यनाटिका प्रस्तुत की।

गत वर्ष अक्टूबर में एक अमेरिकी चार्टर्ड विमान से 100 लोग पंजाब वापस भेजे गए थे। कुल मिलाकर अक्टूबर 2023 से लेकर सितंबर 2024 के बीच 1100 अवैध प्रवासी भारतीयों को अमेरिका ने चुपचाप स्वदेश भेजा था। इस बार अंतर केवल इतना है कि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इस प्रक्रिया को अत्याधिक नाटकीय बनाते हुए बहुत महंगे सैन्य विमानों का उपयोग किया है...

ट्रंप और वैश्वीकरण की सांसें

गत बुधवार (5 फरवरी) अमेरिका से 104 अवैध प्रवासी भारतीय बेइज्जत होकर अमेरिकी सैन्य विमान से स्वदेश लौटे। इन सबकी 40 घंटे की यात्रा कितनी अपमानजनक रही होगी कि उन्हें हथकड़ी और बेड़ियों से बांधा गया था। यह दुर्भाग्यशाली लोग बेईमान ट्रैवल एजेंट, अपने लालच और रातोंरात अमीर बनने की चाह के शिकार थे। यह ध्यान रहे कि इनमें से कोई भी गरीब नहीं था। इन सभी ने अमेरिका जाने हेतु जिस गैर-कानूनी मार्ग को अपनाया, उसके लिए उन्होंने 50 लाख से लेकर एक करोड़ रूपये तक खर्च किए थे।

यह कोई पहली नहीं बार है कि जब अमेरिका से अवैध प्रवासी भारतीय स्वदेश लौटे हो। गत वर्ष अक्टूबर में एक अमेरिकी चार्टर्ड विमान से 100 लोग पंजाब वापस भेजे गए थे। कुल मिलाकर अक्टूबर 2023 से लेकर सितंबर 2024 के बीच 1100 अवैध प्रवासी भारतीयों को अमेरिका ने चुपचाप स्वदेश भेजा था। इस बार अंतर केवल इतना है कि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इस प्रक्रिया को अत्याधिक नाटकीय बनाते हुए बहुत महंगे सैन्य विमानों का उपयोग किया है। निसंदेह, यह घटनाक्रम भारत के लिए शर्मिंदगी का विषय है। यह सब अमेरिका में वैध रूप से जीवनयापन कर रहे 50 लाख भारतीय मूल के अमेरिकी नागरिकों को भी असहज करता है, जो अपनी प्रतिभा, शिक्षा, योग्यता और संस्कृति से जुड़ाव के कारण सफल हैं। इस भारतीय समूह की औसत घरेलू आय $1,45,000 है, जो अमेरिका के राष्ट्रीय औसत $80,610 से कहीं अधिक है।

आखिर क्यों विकासशील देशों के लोग बड़ी संख्या में अमेरिका जाना चाहते है? जिस अमेरिका को हम जानते है, उसे वर्ष 1492-93 में यूरोपीय ईसाई प्रचारक क्रिस्टोफर कोलंबस ने भारत समझकर अज्ञानतावश खोजा था। जहां यूरोपीय औपनिवेशवादियों ने विस्तारवाद और मजहबी दमनचक्र करके अमेरिका के मूल ध्वजावाहकों और उनकी संस्कृति को संग्रहालय की शोभा बढ़ाने तक सीमित कर दिया, तो इसी अवधि में वे यूरोप से अमेरिका में आर्थिक-बौद्धिक पूंजी का निवेश करते रहे। अमेरिकी जनगणना के अनुसार, वर्ष 1610 में गैर-मूलनिवासी 'औपनिवेशवादियों' की आबादी केवल 500 थी, जो 1780 में बढ़कर लगभग 28 लाख हो गई। इसके आठ साल बाद नए राष्ट्र 'संयुक्त राज्य अमेरिका' का संविधान अस्तित्व में आया।

अमेरिका की आबादी 34 करोड़ है, जो भारत की कुल जनसंख्या का केवल एक चौथाई हिस्सा है। अमेरिका का भू-भाग भारत से तीन गुना बड़ा है। इसके

इस्लाम 1400 वर्षों से है। वामपंथ ने अपनी निरंकुश-हिंसक और मानवता-विरोधी चिंतन के कारण 74 वर्षों (1917-91) में दम तोड़ दिया। वर्तमान समय में चीन का वैचारिक-राजनीतिक अधिष्ठान वामपंथी, तो आर्थिकी पूंजीवादी है। उत्तर-कोरिया, लाओस, वियतनाम, क्यूबा भी साम्यवादी देश है और इनमें से कोई भी दुनिया में खुशहाल और आदर्श समाज की परिकल्पना प्रस्तुत नहीं कर पाया है...

पास 95,000 किलोमीटर लंबी तटीय रेखा हैं, तो 256 अरब बैरल कच्चे तेल के भंडार हैं, जो सऊदी अरब से भी अधिक हैं। अमेरिका वैश्विक 45 प्रतिशत पानी, 22 प्रतिशत कोयला, छह प्रतिशत जमीन, दस प्रतिशत कृषि योग्य भूमि और मात्र चार प्रतिशत जनसंख्या के साथ दुनिया का संपन्न देश है। उसकी सीमाएं भारत-पाकिस्तान, भारत-चीन, भारत-बांग्लादेश या फिर यूरोप-रूस जैसी जटिल और तनावग्रस्त नहीं है। ईरान, चीन और रूस जैसे 'शत्रु राष्ट्र' अमेरिका से हजारों किलोमीटर दूर हैं। अमेरिका की यही विशेषता विकासशील देशों के कई लोगों को आकर्षित करती है।

इसी स्थिति को अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप बदलना चाहते है। उनकी नीति अपने देश को उन मूल्यों से अंगीकृत करना है, जिसमें केवल अमेरिका और उसके मूल नागरिकों के लिए स्थान हो। इसी श्रृंखला में ट्रंप ने अपने कार्यकारी आदेशों से विश्व में 'शुल्क युद्ध' भी प्रारंभ कर दिया। जैसे ही 1 फरवरी को अमेरिका ने मेक्सिको और कनाडा से आयातित वस्तुओं पर 25 प्रतिशत और चीन पर 10 प्रतिशत का अतिरिक्त शुल्क लागू किया, वैसे ही कनाडा-मैक्सिको ने पलटवार करते हुए अमेरिकी आयातित वस्तुओं पर भी अतिरिक्त शुल्क लगा दिया। यह अलग बात है कि ट्रंप ने बाद में एक समझौते के तहत कनाडा-मैक्सिको को इससे राहत दे दी। ट्रंप ब्रिक्स समूह (भारत सहित) को भी व्यापारिक लेनदेन में अमेरिकी डॉलर का विकल्प ढूंढने पर चेतावनी जारी कर चुके है। इसी पृष्ठभूमि में यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि वैश्वीकरण, जिसका जन्म दूसरे विश्वयुद्ध (1939-45) के बाद हुआ था— उसके ताबूत में ट्रंप अपनी नीतियों से अंतिम कील ठोक रहे है।

यह सच है कि विचारों के संसार में वैश्वीकरण की आयु अबतक सबसे कम है, जिसका दशकों तक अमेरिका पर्याय और संरक्षक रहा है। भारत की सनातन परंपरा कालजयी है। मजहब के रूप में यहूदी तीन हजार से अधिक, ईसाइयत दो हजार, तो इस्लाम 1400 वर्षों से है। वामपंथ ने अपनी निरंकुश-हिंसक और मानवता-विरोधी चिंतन के कारण 74 वर्षों (1917-91) में दम तोड़ दिया। वर्तमान समय में चीन का वैचारिक-राजनीतिक अधिष्ठान वामपंथी, तो आर्थिकी पूंजीवादी है। उत्तर-कोरिया, लाओस, वियतनाम, क्यूबा भी साम्यवादी देश है और इनमें से कोई भी दुनिया में खुशहाल और आदर्श समाज की परिकल्पना प्रस्तुत नहीं कर पाया है।

दुनिया में 'आदर्श समाज' कैसा हो और आर्थिकी के मानक कैसे हो, इसपर भी 'व्हाइट मेन बर्डन' चिंतन से प्रेरित अमेरिका और पश्चिमी देशों का एकतरफा

वर्ष 2008 की वैश्विक मंदी के बाद अमेरिका सहित यूरोपीय देशों को अपनी गलती का बोध हुआ और वर्ष 2015 में किसी भी देश में विकास के लिए उसकी संस्कृति को आधार बताया। बतौर अमेरिकी राष्ट्रपति अपने शासनकाल (2016-20 और अब) में ट्रंप ने जो निर्णय लिए, वह संभवत: इसी परिवर्तन का मूर्त रूप है....

नियंत्रण रहा है। जब अमेरिका और यूरोपीय देशों के समर्थन से वर्ष 1945 में संयुक्त राष्ट्र का जन्म हुआ, तब उसके सामाजिक-आर्थिक विभाग ने वर्ष 1951 में 'वन मॉडल, फिट्स ऑल' शेष विश्व पर थोपते हुए कहा, "ऐसा अनुभव होता है कि तीव्र आर्थिक प्रगति बिना दर्दनाक समायोजन के संभव नहीं। इसमें प्राचीन दर्शनों को छोड़ना; पुरानी सामाजिक संस्थाओं को विघटित करना; जाति, मजहब और पंथ के बंधनों से बाहर निकलना...होगा।" इसका मर्म यह था कि मानव केंद्रित प्रगति-उत्थान के लिए प्राचीन संस्कृति-सभ्यता और परंपराओं को ध्वस्त करना होगा, चाहे उसका समृद्ध इतिहास ही क्यों न हो। भारत के प्रति वामपंथ के प्रणेता कार्ल मार्क्स (1818-83) का यही चिंतन था।

वर्ष 2008 की वैश्विक मंदी के बाद अमेरिका सहित यूरोपीय देशों को अपनी गलती का बोध हुआ और वर्ष 2015 में किसी भी देश में विकास के लिए उसकी संस्कृति को आधार बताया। बतौर अमेरिकी राष्ट्रपति अपने शासनकाल (2016-20 और अब) में ट्रंप ने जो निर्णय लिए, वह संभवत: इसी परिवर्तन का मूर्त रूप है। इसलिए अमेरिका, जो स्वयं को वैश्वीकरण का झंडाबरदार समझता था— उसने इस वहम को त्याग दिया। विकासशील देशों के हजारों-लाखों लोग दशकों से अमेरिकी चकाचौंध से प्रभावित होते रहे है और लालच में आकर वहां पहुंचने हेतु अवैध मार्ग भी अपना लेते है। उन्हें सोचना चाहिए कि बदलते वैश्विक परिदृश्य में देश से बाहर घी-चुपड़ी रोटी से कहीं गुना बेहतर घर में मिलने वाली संतोषप्रद और आरामदायक सूखी रोटी है। शायद 40 घंटे की लज्जित यात्रा करके और अपना सबकुछ गंवाकर स्वदेश लौटे 104 भारतीय यही सोच रहे होंगे।

बलबीर पुंज

राम बहादुर चौधरी का जीवन हर कार्यकर्ता के लिए एक प्रेरणा का स्रोत है। राम बहादुर चौधरी का जन्म किसान परिवार में 1922 ई. को हुआ था। आपके पिताजी स्वर्गीय विशेश्वर चौधरी एक समृद्ध किसान थे। राम बहादुर चौधरी तीन भाई थे। सबसे बड़े आप स्वयं थे...

संघ के प्रचारक रहे वयोवृद्ध स्वयंसेवक का निधन

स्वतंत्रता के पूर्व स्वयंसेवक बने वयोवृद्ध स्वयंसेवक राम बहादुर चौधरी ने 2 फरवरी को पूर्वाह्न 11:00 बजे अंतिम सांस ली। राम बहादुर चौधरी संघ पर प्रतिबंध के समय प्रचारक बने और 1967 तक प्रचारक का दायित्व निभाया। इस क्रम में आपने बेगूसराय, समस्तीपुर, सिवान, दरभंगा, पूर्णिया जैसे कई स्थानों पर प्रचारक के रूप में कार्य किया। दरभंगा शहर के समीप स्थित दरहाड़ गांव के रहनेवाले राम बहादुर चौधरी के पार्थिव शरीर को मुखाग्नि 3 फरवरी को इनके वरिष्ठ पुत्र कन्हैया चौधरी ने दी। डॉ कन्हैया चौधरी एलएनएम कॉलेज में विभागाध्यक्ष थे।

राम बहादुर चौधरी का जीवन हर कार्यकर्ता के लिए एक प्रेरणा का स्रोत है। राम बहादुर चौधरी का जन्म किसान परिवार में 1922 ई. को हुआ था। आपके पिताजी स्वर्गीय विशेश्वर चौधरी एक समृद्ध किसान थे। राम बहादुर चौधरी तीन भाई थे। सबसे बड़े आप स्वयं थे। उनसे छोटे श्याम बहादुर चौधरी और सबसे छोटे भाई विजय बहादुर चौधरी थे। पढ़ाई के क्रम में राम बहादुर जी नागेश्वर बाबू के संपर्क में आए और स्वयंसेवक बने। मैट्रिक पास करने के बाद संघ शिक्षा वर्ग करने गए और वहीं से प्रचारक हो गए। उन दिनों प्रचारक रहते हुए भी कोई शादी कर सकता था। ऐसे में राम बहादुर चौधरी का विवाह 50 के दशक में हुआ। 1967 में वापस अपने पैतृक घर दंडहरा आए और तब से यही रहकर समाज सेवा कर रहे थे। पत्नी का निधन 1970 में हो गया। इन्हें दो बेटी और दो बेटा हुए। अभी सिर्फ सबसे बड़े बेटे कन्हैया चौधरी जीवित हैं, जो दरभंगा के एक कॉलेज से विभाग अध्यक्ष के तौर पर सेवानिवृत होकर घर में रह रहे हैं।कन्हैया जी भी बाल स्वयंसेवक हैं। संघ के प्रान्त प्रचार प्रमुख डॉ अविनाश कुमार ने बताया कि राम बहादुर जी का घर संघ के कार्यकर्ताओं के लिए हमेशा खुला रहता था। जब किसी कार्यकर्ताओं को भोजन कराने में राम बहादुर जी और कन्हैया जी हमेशा लालायित रहते थे। राम बहादुर जी ने कभी विश्राम नहीं किया सतत कार्य करते रहे। संघ के और जनसंघ की जड़ें ज़माने में आपने अथक परिश्रम किया। राम बहादुर जी का 100 वर्ष की आयु में संघ की प्रार्थना करते वीडियो वायरल हुआ था। कुछ समय से बीमार थे। लगभग 1 माह पूर्व अपने छोटे भाई ने निधन के बाद ईश्वर से प्रार्थना किया करते थे कि वे अपने पास इन्हें बुला ले।

संजीव कुमार

महाबोधि मंदिर में चढ़ने वालों फूलों से बन रही अगरबत्तियां

रोज 350KG पुष्पों की होती है प्रोसेसिंग, IIT कानपुर के स्टार्टअप के जरिए हो रहा निर्माण

महाबोधि मंदिर में चढ़ने वाले फूलों से बनने वाली सुगंधित अगरबत्तियां बनाई जा रही हैं। ये खास अगरबत्तियां IIT कानपुर के स्टार्टअप फूल डॉट कॉम के जरिए बनाई जा रही हैं। फिलहाल अंकित अग्रवाल और उनकी पूरी टीम 'मन की बात' कार्यक्रम को लेकर दिल्ली में हैं। महाबोधि मंदिर में चढ़ने वाले फूलों से बोधगया के धनावां में बगैर चारकोल इस्तेमाल किए अगरबत्ती तैयार की जा रही है। हालांकि, यह यूनिट नई है। 2022 में करार हुआ था। 2024 के नवंबर में धनावां में यूनिट स्थापित की गई और फूलों से बनी धूप और अगरबत्तियों का उत्पादन शुरू हुआ था।

बोधगया के धनावां प्लांट में रोजाना 350 किलो फूल प्रोसेस किए जा रहे हैं, जबकि इसकी कुल क्षमता 1.6 टन प्रतिदिन है। इस प्रोजेक्ट पर करीब 1.8 करोड़ रुपए का निवेश किया गया है। फूल डॉट कॉम सिर्फ पर्यावरण बचाने का ही काम नहीं कर रही, बल्कि रोजगार भी दे रही है। अभी तक 42 महिलाओं को इसमें काम दिया गया है और जल्द ही यह संख्या 70 तक पहुंच जाएगी। बोधगया स्थित महाबोधि मंदिर में रोज हजारों श्रद्धालु फूल चढ़ाते हैं। पहले ये फूल कचरे में फेंक दिए जाते थे, लेकिन अब इन्हें इकट्ठा कर प्रोसेस किया जा रहा है। गया के जिलाधिकारी और बोधगया मंदिर प्रबंधन समिति (BTMC) ने IIT कानपुर की स्टार्टअप कंपनी फूल डॉट कॉम से करार किया है, जिससे इन फूलों को रिसाइकल कर सुगंधित अगरबत्तियां और धूप बत्तियां बनाई जा रही हैं। फूल डॉट कॉम की अगरबत्तियां और धूप बत्तियां आधिकारिक वेबसाइट phool.com पर उपलब्ध हैं। यहां विभिन्न सुगंधों और उत्पादों की लंबी श्रृंखला मौजूद है, जिन्हें ग्राहक ऑनलाइन खरीद सकते हैं। इसके अलावा, ये उत्पाद चुनिंदा रिटेल स्टोर्स और ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स पर भी उपलब्ध हैं।

डाक टिकट

पता